KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ OCT-DEC (2017)/VOL-4/ISS-4/A3 PAGE NO.10-13
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

समाजवादी चिंतक यादवेंद्र शर्मा चंद्र

[1]DR.CHAMKAUR SINGH
[1]Asst. prof., PG Dept. of Hindi, Guru Nanak College, killianwali
Muktsar sahib, Punjab

ABSTRACT

"समाज की भावनाएं ही लेखनी–बद्ध होकर साहित्य की संज्ञा प्राप्त करती है, साहित्य मानव जीवन की व्याख्या या आलोचना है।"[1] यादवेन्द्र ने अपने जीवन व परिवेश के समाज का मर्मस्पर्शी एंव यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया "प्रत्येक समाज की सभ्यता, संस्कृति, बौद्धिक–गरिमा, अर्थव्यवस्था, वैज्ञानिक प्रगति, रुढ़ि–परम्पराओं की स्थिति और भावी बहुमुखी योजनाओं का प्रतिबिम्ब उसका साहित्य ही होता है[2] यादवेन्द्र जी ने अपने लेखन से राजस्थानी परिवेश की समस्याओं (निरन्तर अकाल, अभाव एंव रोटी की समस्या, विविध अंचलो में बसने वाले गरीब एंव पिछडे समाज के दलित, उपेक्षित, अछूत समझे जाने वाले व्यक्तियों की मनोदशा को उभारा है। "श्रेष्ठ साहित्यकार की संवेदनशीलता सामाजिक समस्याओं से मुंह नहीं मोड़ सकती"[3] यादवेन्द्र ने अपने मारवाड़ी समाज की समस्याओं को अपनी रचनाओं मे सशक्त रुप से चित्रित किया है। यादवेन्द्र के उपन्यासों में प्रदेश जाने वाले मध्यम व धनिक वर्ग के व्यक्तियों के सामाजिक जीवन का सूक्ष्म अंकन मिलता है। इस धनिक सेठों की स्त्रियां यहां सेठानी होने का सुख भोगती हैं वहीं अपने प्रियतम के बिना सारी जिन्दगी अकेली, पिया बिन सेज के भोगती हैं। इन स्त्रियों को शारीरक सुख से ज्यादा मानसिक दुख अधिक तड़पाता रहता है। यादवेन्द्र के उपन्यास इन सेठानियों के मार्मिक चिंतन से भरे पडे हैं।

KAAV

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org